दिनांक 10 सितम्बर, 2017 को रिम्स सभागार, राँची में हिन्दी दैनिक समाचारपत्र ''प्रभात खबर'' द्वारा आयोजित ''गुरू शिक्षा सम्मान समारोह'' के अवसर पर माननीया राज्यपाल जी का अभिभाषण:–

मुझे हिन्दी दैनिक समाचारपत्र प्रभात खबर द्वारा आयोजित ''गुरू शिक्षा सम्मान समारोह'' में आप सभी के मध्य सम्मिलित होकर अपार प्रस्सन्नता हो रही है। मैं इस अवसर पर सम्मानित होनेवाले सभी गुरूजनों को बधाई देती हूँ तथा आशा करती हूँ कि गुरूजन अपने शिष्यों के उज्ज्वल भविष्य निर्माण की दिशा में सदैव सचेष्ट एवं सजग रहेंगे।

भारत में प्राचीनकाल से ही गुरू को अत्यन्त पूजनीय माना गया है। रामायणकाल में महर्षि विश्वामित्र, महाभारत काल में गुरू द्रोणाचार्य आदि का वर्णन मिलता है, जो अपने शिष्यों का बेहतर मार्गदर्शन करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। उनके जीवन में उनके शिष्य की सफलता ही सबसे बड़ा ध्येय अथवा मकसद था। गुरू का कार्य ही है– व्यक्ति की प्रतिभाओं को तराशना तथा जीवन में सफलता प्राप्त करने हेतु प्रेरित उन्हें करना।

गुरू अथवा शिक्षक समाज के वह पथ–प्रदर्शक हैं जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाते हैं। वे नैतिक शिक्षा प्रदान करते हैं। कहते हैं यदि जीवन में शिक्षक नहीं हो तो शिक्षण संभव नहीं है। शिक्षण का शाब्दिक अर्थ, शिक्षा देने से है, लेकिन इसकी आधारशिला शिक्षक ही रखते हैं। डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन भी एक शिक्षाविद् थे, जिन्होंने अपनी शिक्षण कला से अपनी विशिष्ट पहचान बनाई तथा भारत के राष्ट्रपति के पद को भी सुशोभित किया। एक बेहतर शिक्षक कैसा हो, इसकी

मिशाल थे–हमारे पूर्व राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन। महान वैज्ञानिक एवं पूर्व राष्ट्रपति डा० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम भी अपनी कार्यशैली से शिक्षाविद् ही थे। वे अपने ज्ञान को विद्यार्थियों में बाँटते थे तथा उन्हें अधिक–से–अधिक ज्ञान हासिल करने के लिए प्रेरित करते थे। वे युवाओं एवं बच्चों के रोलमॉडल बने।

शिक्षक का काम ही है ज्ञान को एकत्र करना या प्राप्त करना और फिर उसे बांटना। उन्हें ज्ञान का दीपक बनकर चारों तरफ अपना प्रकाश फैलाना चाहिये, उनके ज्ञान की गंगा हमेशा बढ़ती रहनी चाहिये। शिक्षा का लक्ष्य ही है– ज्ञान के प्रति समर्पण की भावना और निरंतर सीखते रहने की लगन। राष्ट्र के सशक्तिकरण के लिए समाज के तीन प्रमुख सदस्य माता, पिता और गुरू को अपनी भूमिका का पूर्ण निर्वाह सदैव करते रहना होगा।

महान् दार्शनिक अरस्तू ने कहा है कि जन्म देने वालों से अच्छी शिक्षा देने वालों को अधिक सम्मान दिया जाना चाहिए क्योंकि जन्म देने वाले ने तो बस जन्म दिया है, पर शिक्षकों ने जीना सिखाया है। आप तमाम गुरुजनों से राज्य एवं राष्ट्र को असीम अपेक्षायें हैं। आप ही व्यक्ति के अन्दर मौजूद दुर्गुणों व बुरे विचारों को निर्मूल कर अथवा दूर कर न सिर्फ उसे योग्य व्यक्ति बनाते हैं, बल्कि समाज एवं राष्ट्र को भी प्रकाशमान करते हैं। आप राष्ट्रनिर्माण के महान सारथि है।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि शिक्षा के बिना किसी भी राष्ट्र का विकास संभव नहीं है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की कुंजी होती है और आप सब राष्ट्र के विकास में अहम भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं, आप ही के कंधों पर विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने एवं उन्हें आत्मबल प्रदान करने का दायित्व है,

ताकि वे समाज एवं देश की सेवा निष्ठा एवं समर्पण से कर सकें। आप शिक्षक समुदाय ने इस राष्ट्र को सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा से सुशोभित करनेवाले Scientist, Educationist, Doctor, Engineer, Administrative Officer, Police Officer समेत अन्य Professionals के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है, आपके असली सम्मान ये गौरवमयी students ही हैं। वास्तव में शिक्षा से जुड़े हुए व्यक्ति का असली सम्मान तब बढ़ता है, होता है जब कोई विद्यार्थी यह कहता है, महसूस करता है कि उसकी सफलता के पीछे अमूक Teacher का विशेष हाथ है अथवा वह आज जो कुछ भी है, वह अपने उस Teacher की बदौलत हैं।

मुझे विश्वास है कि हमारे समाज में गुरूओं का महत्व सम्मान सदा बरकरार रहेगा। गुरू का भी आचरण ऐसा रहेगा कि शिष्य उन्हें अपना रोलमॉडल मानेंगे। गुरू–शिष्य संबंध और प्रगाढ़ होंगे। गुरूजनों के मार्गदर्शन, उनके द्वारा दिये गये नैतिक शिक्षा एवं राष्ट्र–प्रेम की भावना से हमारा राष्ट्र और तीव्र गति से प्रगति करेगा।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!